शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मधु कांकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनाली सिंह (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत में वेश्यावृत्ति एक गंभीर समस्या है। दुखद पहलु यह है कि इसमें बहुत कम उम्र की लड़कियों को धकेल दिया जाता है। गरीबी इसका बहुत बड़ा कारण है। एक ओर तो भारत में नैतिकता के ऊँचे मानदंडों के होने की बात कही जाती है दूसरी ओर स्त्रियों का हरेक स्तर पर अनेकानेक प्रकार से शोषण किया जाता है। अनेक लोग इस वाक्य को दोहराते मिल जाते हैं कि जहां स्त्रियों की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है, परन्तु व्यवहार में स्थिति बिलकुल उलट है। मधु कांकरिया के उपन्यास 'सलाम आख़िरी' इसी समस्या का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'सलाम आख़िरी' उपन्यास में चित्रित समस्या का विश्लेषण किया गया है।

भूमिका

भारत जहां संस्कृति व संस्कारों का देश है, वहीं समस्याओं का देश भी है। भारतीय समाज में अनेक ऐसी समस्याएं है जो सदियों से चली आ रही हैं, पर उसका उचित हल अभी तक नहीं निकाला जा सका है या फिर यूं कहा जाए कि उसकी जरूरत ही नहीं समझी गई है। ऐसी ही एक सामाजिक बुराई है, वेश्यावृत्ति जो हमारे समाज में इस कदर जड़ें जमाए बैठी है जैसे यह इसका अनिवार्य अंग हो। अनेक सामाजिक कार्यकताओं, सरकारी-गैर सरकारी संगठनों व साहित्यकारों ने इस समस्या के उन्मूलन के लिए प्रयास किए हैं और आज भी कर रहें है, परन्तु वे भी अब तक इसका सटीक हल नहीं निकाल पाए हैं।

किसी भी समस्या के समाधान के लिए जरूरी है उसके इतिहास के बारे में जानना - सम्बन्धित समस्या की उत्पत्ति किन परिस्थितियों में हुई ? उसकी उत्पत्ति के कारण, समस्या का स्वरूप क्या था इत्यादि। इस प्रकार यदि हम भारत में वेश्यावृत्ति के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि किसी न किसी रूप में यह सदियों से अपने देश में व्याप्त रही है। वैदिक काल की अप्सरायें, गणिकाएं मध्ययुग में देवदासियाँ व नगर वधुएँ, वर्तमान समय की वेश्याओं के ही सम्मानित रूप थे। अन्तर सिर्फ इतना है कि तब ये धर्म से सम्बद्ध थीं तथा नृत्य-संगीत की कलाओं मे निपुण भी। साथ ही वे कभी-कभी राजाओं की सलाहकार व गुप्तचर भी हुआ करती थीं। लेकिन देश में मुगलों के आगमन के साथ ही इनकी संख्या बढ़ती गई और तब ये वारांगनाएँ तथा वेश्यायें कहलायी। आज हालात ये है कि जीविकोपार्जन के सीमित साधन, शिक्षा के अभाव, उचित संरक्षण आदि न होने के कारण महिलायें इस जलील पेशे को अपना रही हैं। साथ ही एक कडवा सच यह भी है कि वेश्यावृत्ति में सिर्फ गरीब व मजदूर महिलायें ही लिप्त नहीं रहती वरन कुछ महिलायें नौकरी में उन्नति पाने

के लिए कम समय में ज्यादा पैसा कमाने और अपनी वर्तमान स्थिति को बेहतर व विलासिता से भरपूर बनाने के लिए भी अपनी इच्छा से इस व्यवसाय में उतर रही हैं।

मधु कांकरिया और सलाम आख़िरी उपन्यास

'सलाम आखिरी' मधु कांकरिया द्वारा लिखा गया एक ऐसा ही उपन्यास है जो वेश्यावृत्ति के पूरे परिदृश्य को देखते हुए हमारे अन्दर उन असहाय और शोषित स्त्रियों के प्रति करूणा और सहानुभूति जगाने की कोशिश करता है जो किन्ही कारणों से इस बदनाम व्यवसाय में फंसी हुई हैं।

'सलाम आखिरी' में वेश्यावृत्ति जैसे संवेदनशील विषय को पहली बार एक औरत की नजरों से देखकर इस दुनिया की कुरूपता और भयानक वातावरण का चित्रण किया है, जिसके बारे में बात करने से भी तथाकथित सभ्य समाज के लोग कतराते हैं। ऐसा नहीं है कि इस विषय को लेकर किया गया ये पहला प्रयास है। पहले भी विद्वानों व साहित्यकारों ने इस विषय पर लिखा है। कभी इस बुराई के पीछे के कारणों को जानने का प्रयास किया गया, तो कभी इसके परिणामों की विवेचना की गई, लेकिन वह सारा विवेचन समस्या को दूर से ही एक सामाजिक विषय या चिन्ता के रूप में देखकर लिखा गया है। उपन्यास के शुरूआत में लेखिका ने इस संवेदनशील विषय की रचना प्रक्रिया की चुनौतियों की ओर संकेत कर लिखा है- "इस उपन्यास के दौरान लेखनी जैसे हाथों से छूट-छूट जाती थी। यहाँ पग-पग पर चुनौतियां थीं। संस्कार और संस्कृति के कटघरे थे। एक आत्मसंघर्ष निरन्तर चलता रहा - क्या रहे लेखिका की लक्ष्मण रेखा ?"

उपन्यास में कलकत्ता के सबसे पुराने बदनाम व अच्छी खासी आबादी वाले लालबत्ती इलाके सोनागाछी की पृष्ठभूमि मे होने वाले स्त्री देह के व्यापार के रूप में जीवन के ऐसे कुरूप और भयानक पक्ष को उजागर किया है, जिससे रूबरू होने पर कोई भी संवेदनशील व्यक्ति जिन्दगी पर अपनी बनी बनाई राय बदलने को मजबूर हो जाए। उस इलाके में स्वतन्त्र चकला चलाने वाली मीना के अधीन छः लाइनवालियां (वेश्याएं जिन्हें ढकी हुई भाषा में लाइनवाली कहा जाता है) हैं। उन सबके वेश्यावृत्ति को अपनाने के कारणों को जानकर लेखिका स्तब्ध रह जाती है। नूरी नाम की औरत जो सुन्दरबन के पास के किसी गांव से वहां आयी थी, बाढ की तबाही के कारण अपने परिवार को भुखमरी से बचाने के लिए वेश्यवृत्ति को अपनाती है। उसी चकले की एक और औरत नलिनी को प्रेम में विश्वासघात मिलता है। जो पुरूष उससे प्रेम का नाटक कर उसे गांव से भगाकर लाया, उसी ने नलिनी को पैसे की खातिर वहीं के एक चकले में बेच दिया। चकले की मालकिन मीना भी परिवार में पैसे की तंगी के चलते घर से दूर एक छोटी-सी बिना माँ की बच्ची की देखरेख का काम करती थी। उस बच्ची के पिता ने ही मीना की इज्जत से खिलवाड किया। और जब वह उससे बचकर घर से भागी तो एक-दूसरे व्यक्ति ने उससे अपनी वासनापूर्ति कर उसे उन अन्धी गलियों में बेच दिया।

आमतौर पर यही आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण मजबूर औरतों को वेश्यावृत्ति के दलदल में फँसाने के निमित्त बनते हैं। बहुत-सी ऐसी औरतें जो जीविकोपार्जन के अन्य साधनों के अभाव में स्वयं की व स्वयं पर आश्रित परिवारीजनों की भूख को शान्त करने

के लिए इस व्यवसाय को अपनाने के लिए मजबूर होती हैं।

वे लडकियां जिनके साथ बलात्कार जैसा कृत्य होता है, वे भी समाज के बहिष्कार के डर से वेश्यावृत्ति को अपनाना ही ठीक समझती हैं। इसके बारे में उपन्यास में भी बताया गया है कि यदि कोई स्त्री किसी की कामुक प्रवृत्ति का शिकार हो जाती है तो उसके पास वेश्यावृत्ति अपनाने के सिवाय कोई विकल्प शेष नहीं रहता। "महाभारत के वनपर्व में रामोपख्यान की एक उक्ति है - जैसे कुत्ते के द्वारा चाटे गए घी का यज्ञ में व्यवहार नहीं होता, उसी तरह परहस्तगता नारी भी पति के भोग के लायक नहीं बचती।"2

इस प्रकार देखा जाए तो अपने सभ्य समाज की ही खोखली मान्यताओं, रूढियों व गलत नीतियों के कारण यह घृणित व्यवसाय चलन में बढता जा रहा है। इसके साथ-साथ विधवाओं, तलकाशुदा औरतों के पुनर्विवाह पर रोक, सामान्य चारित्रिक भूल के कारण सामाजिक बहिष्कार का डर भी इस घिनौनी वृत्ति को प्रोत्साहन देते हैं।

वेश्यावृत्ति को नारी देह के व्यापार के रूप में भी पारिभाषित किया जाता है और व्यापार होता है, बाजारों में। बाजार में जिस वस्तु की मांग होगी, वही वहां उपलब्ध करायी जाएगी। स्त्री की आवश्यकता अत्यधिक कामुक प्रवृत्ति वाले पुरूषों को होती है। वे अपनी कामवासना की तृप्ति उन्मुक्त यौन सम्बन्धों द्वारा करते हैं। कुछ विवाहित पुरूष भी मात्र वैवाहिक सम्बन्धों से अपनी कामुक प्रवृत्ति को पुष्ट नहीं कर पाते और वेश्यागमन करते हैं। अतः काफी हद तक स्त्रियों के द्वारा उनके शरीर का सौदा करने के लिए पुरूषों को जिम्मेदार माना जा सकता है।

वर्तमान समय की गलाकाट प्रतिस्पर्धा वाले युग में कुछ अति महत्वाकांक्षी लडकियां व औरतें वेश्यावृत्ति को अपने नौकरीपेशा जीवन में आगे बढने पदोन्नति पाने के लिए प्रयोग मे लाती हैं। कई बार आफिस में काम करने वाली लडकियां अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आगे अपनी देह परोस देती हैं, जिससे खुश होकर उन्हें नौकरी में फायदा भी पहुंचाया जाता है। जाने कितनी ही बार ये देखा गया है कि व्यावसायिक संस्थानों व मनोरंजन जगत में लडकियां, अपने आस-पास के वातावरण से प्रभावित होकर अपने साथ काम करने वाले अमीर लडकियों को देख उनके जैसा बनने के चक्कर में आकर गलत कार्यो में लिप्त हो जाती हैं। वे दूसरी लडकियों की तरह विलासिता के महंगे साधनों के लालच मे आकर कोई भी निकृष्ट कार्य करने के लिए अपने कदम उस ओर बढ़ा देती हैं। इस प्रकार अब सिर्फ मजबूर, अनपढ़, गरीब औरतें ही नहीं बल्कि पढ़ी-लिखी, सशक्त, लेकिन बाहरी तड़क भड़क वाली दुनिया की चकाचौंध में अन्धी होकर भी लडकियां ऐसे अंधेरे गर्त में चली जाती हैं, जहां से लौटना भी उनके लिए मुश्किल हो जाता है।

उपर्युक्त कारणों के साथ-साथ एक और कारण है जो वेश्यावृत्ति को बढावा दे रहा है। वेश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं की बच्चियाँ भी इससे अछूती नहीं रहती। कई बार तो ना चाहते हुए भी उन्हे अपनी माँ के व्यवसाय को ही अपनाना होता है। क्योंकि एक वेश्या की बेटी होने के कारण उनको समाज मे वही व्यवहार सहना पडता है, जो उनकी माओं के साथ होता है। कई बार वे अपनी पहचान छिपाकर कोई दूसरा काम या मजदूरी करती भी हैं तो उनका सच सामने आ जाने से कुण्ठा और अपमान भी सहना पड़ता है। जिससे बचने के लिए वे उसी पेशे मे उतर जाती हैं, जो

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उनकी माँ करती आ रही है। उपन्यास मे भी एक ऐसी परिस्थिति का जिक्र किया गया है, जहां कालीघाट की एक वेश्या माया, जिसने अपनी बेटी के लिए अनगिनत ख्वाब देखे थे, जो अपने बदनाम पेशे की परछाई भी उस पर नहीं पड़ने देना चाहती थी, उसकी अनुपस्थिति में उसी के एक नियमित ग्राहक ने उसकी बेटी विशाखा को अपनी कामुकता का शिकार बना उसे भी उसे दलदल मे फेंक दिया।

वेश्यावृत्ति खुद में ही एक बड़ी समस्या है और साथ ही साथ कई और समस्याओं को भी जन्म देती है। इसमें लिप्त औरतें शिक्षा और जागरूकता के अभाव में कई गंभीर व लाइलाज बिमारियों का शिकार होती रहती हैं। उपन्यास में वैश्या रेशमी की स्थिति भी कुछ ऐसी ही हो जाती है। वह मात्र चालीस वर्ष की उम्र में एड्स जैसी जानलेवा बीमारी से ग्रस्त थी। रेशमी से ही एक सोलह वर्षीय लडकी के बारे में पता चलता है जो एच.आई.वी. पाजिटिव व चर्म रोग से पीड़ित थी। उसकी चमड़ी पर व शरीर में भीतर गहरे-गहरे घाव हो गए थे। इन बिमारियों से न सिर्फ उन्हें शारीरिक रूप से क्षति पहुँचती है बल्कि मानसिक तौर पर भी नुकसान होता है। घृणा, अपमान, अनैतिकता आदि मानसिक विकारों से ये वेश्याएं घिरी रहती हैं। इनके साथ इनके बच्चे भी स्वस्थ वातावरण तथा उचित संस्कारों के अभाव में बचपन से ही गलत कार्यो में लिप्त हो जाते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि इन परिवारों के बच्चे स्वविवेक से अपना भला-बुरा समझकर अपने कदम सही दिशा की ओर बढ़ाना चाहते है लेकिन ऐसे बच्चों के लिए अपना समाज रास्ते की रूकावट बन जाता है। लालबत्ती इलाकों मे रहने वाले बच्चों को किसी अच्छे स्कूल में प्रवेश नही दिया जाता, क्योंकि समाज के ठेकेदारों के लिये ये नागवार गुरजता है कि वे निकृष्ट समझी जाने वाली औरतों के बच्चों को अपने स्कूलों मे आकर वहां का वातावरण खराब करने दें। उपन्यास में वैश्या पिंकी के बेटे राजा के सामने भी यही परिस्थितियाँ आती हैं। उसे भी किसी प्रतिष्ठित स्कूल में प्रवेश इसी कारण से नहीं मिल रहा था। काफी कोशिशों के बाद ही उसे एक सरकारी, बंगाली माध्यम वाले स्कूल मे दाखिला मिल पाया था। वेश्यावृत्ति मे फँसी औरतों की परेशानियाँ यही खत्म नहीं होती बल्कि उन्हें वेश्यावृत्ति में धकेलने वाली चकला मालकिनों, दलालों और कभी-कभी तो पुलिसवालों के अत्याचारों को भी सहन करना पडता है।

भारतीय समाज में नारी जिसे नवजीवन का संचार करने वाली, पोषित करने वाली शक्ति के रूप में पूजा जाता है, वही उसका ये घिनौना रूप उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाता है। क्या कोई उपाय नहीं है ऐसी स्त्रियों के जीवन को सार्थक बनाने का ? उनका आत्मासम्मान वापस दिलाने व उन्हें एक गरिमामयी जीवन देने का ? क्यों उन महिलाओं के पुनर्वास की जिम्मेदारी सरकार नहीं लेती जो इस पेशे को छोड़ना चाहती हैं ? उसके संरक्षण और भरण पोषण के लिए प्रयास क्यों नहीं किए जाते ? क्योंकि अभी तक वेश्यावृत्ति के उन्मूलन को लेकर गंभीरता से विचार किया ही नहीं गया है। पर अब समय आ गया है कि समस्या की गम्भीरता को समझते हुए इसके निवारण के उपाय किए जाएँ। किसी भी संस्था या व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन के लिए आवश्यक होता है कि बाहरी ढाँचे के साथ-साथ आन्तरिक ढांचा भी व्यवस्थित ढंग से कार्य करे। जिस प्रकार हमारे समाज मे वेश्यावृत्ति शिकंजा कस रही है उसके पीछे का सत्य यह भी है कि पुरूषों द्वारा इसका समर्थन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और इसे बढावा दिया जा रहा है। जब तक इस समाज के पुरूषों का आत्मिक उत्कर्ष नहीं होग, तब तक उसके अन्दर की पाशविक प्रवृतियों का अन्त नहीं होगा। इसके लिए बचपन से ही बच्चों में अच्छे संस्कारों के बीज बोए जाएँ। घरों मे स्वस्थ व शांतिपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराया जाए, शिक्षा के साथ शिष्टाचार आदि सिखाऐं जाएँ तो स्वस्थ मन व स्वस्थ शरीर का विकास होगा। इससे आगे चलकर उनमे वो मानसिक व शरीरिक विकृतियां पोषित नहीं होगी जो वेश्यागमन को प्रेरित करती है। उपन्यास के माध्यम से उन महिलाओं के लिए भी कुछ उपाय सुझाए गए हैं जो वेश्यावृत्ति के पेशे मे फंसी हुई हैं। जो महिलायें हालातों से मजबूर होकर इस वृत्ति को अपनाती हैं उनकी वेश्यावृत्ति छोडने के लिए सरकार को उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। उसके साथ ही उसके भरण, पोषण व संरक्षण की जिम्मेदारी भी लेनी चाहिए जिससे निश्चिंत होकर वे इस दलदल से बाहर निकलने के लिए प्रयासरत हो सके। जो महिलाएं स्वेच्छा से इस कार्य को कर रही हैं, उन्हें एक आम नागरिक के अधिकार मिलना चाहिए। साथ ही उन्हें उनके स्वास्थ्य व बीमारियों के प्रति जागरूक बनाना चाहिए। जो महिलायें ये नहीं चाहती कि उनकी बच्चियां इस घिनौने व्यवसाय का वरण करे उनके लिए उचित शिक्षा व संरक्षण का प्रयत्न भी सरकार को करना चाहिए। जरूरी नहीं है कि सिर्फ सरकार ही ये सब प्रयास करे, समाज मे रहते हुए हर एक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने समाज की बुराईयाँ दूर करने में अपना सहयोग दे। जमीनी स्तर पर हर व्यक्ति का यह फर्ज बनता है कि वह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझे और उसे निभाए। कई सरकारी व गैर सरकारी संगठन इस दिशा में प्रयत्नशील हैं, बस जरूरत है तो दृढ संकल्प लेने की जिससे इस बुराई को समाज से दूर किया जा सकें।

निष्कर्ष

उपन्यास 'सलाम आखिरी' मे मधु कांकरिया वेश्यावृत्ति जैसे भयानक रोग की जांच-पडताल करते हुए उसके कारण और इससे समाज पर पडने वाले प्रभाव को देखते हुए उसे समूल नष्टकर उखाड फेकने की कोशिश करती हुई दिखाई देती हैं। लेखिका ने कुछ विद्वानों का उल्लेख किया है, जो सोचते हैं कि संभ्रान्त घरों की नारियों की आस्मिता बचाने के लिए वेश्याओं का अस्तित्व जरूरी है। परन्तु ऐसे लोग क्या बता सकते हैं कि अपने घरों की बहू-बेटियों की सुरक्षा के लिए हमें दूसरों की बहू-बेटियों को नारकीय जीवन में धकेलने का क्या अधिकार है? महात्मा गांधी का कथन है- 'वेश्यावृत्ति मानव समाज के लिए कलंक है इसके बारे में सोचने पर मुझे शर्म आती है।'

अतः आवश्यकता है वेश्यावृत्ति को जड़ से मिटाने व उन महिलाओं को शिक्षा, उचित संरक्षण व जीवन यापन के अन्य विकल्प प्रदान करने का नही तो इन लोगो का वही हाल होगा जो गंभीर बीमारी मे दवा के अभाव मे रोगी का हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मधु कांकरिया, 'सलाम आखिरी' (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007) पृ.सं. - टप्प्

2. वही, पृ. सं. - 135, 136

3. डॉ. आलोक कुमार सिंह, 'सामाजिक कुरीतियाँ: दोषी कौन ? एस.के.जी. पब्लिशर्स, दिल्ली, 2010

4. राम आहूजा, 'सामाजिक समस्याएं,' रावत पब्लिकेशन, जयपुर 2010

5. तेजस्कर पाण्डेय, संगीता पाण्डेय, 'भारत में सामाजिक समस्याएं , McGraw Hill Education ;India) Pvt.k~ Ltd., नई दिल्ली, 2013